



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

लोक संपर्क कार्यालय

दिनांक ३१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....४ कॉलम.....३८

चारे का उत्पादन भी है दस प्रतिशत अधिक

दूध उत्पादन बढ़ाएगी हक्कुवि की विकसित जई की दो किस्में ओएस 405 व ओएस 424 की भारत के मध्य व पहाड़ी राज्यों के लिए की सिफारिश

कुमार मुकेश/हफ
हिसार, 30 दिसंबर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने जई की एक साथ दो नई व उन्नत किस्मों ओएस 405 व ओएस 424 की विकसित की हैं। दोनों की खास बात यह है कि हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म कैट व ओएस 6 की तुलना में इनका उत्पादन भी 10 प्रतिशत ज्यादा है और इनमें प्रोटीन की मात्रा भी ज्यादा है जिससे पशुओं में दूध उत्पादन भी बढ़ेगा। ये किस्में पत्ता झूलसा रोग के प्रति प्रतिरोधी भी हैं। अब तक हक्कुवि के वैज्ञानिक जई की नौ किस्में विकसित कर चुके हैं। इन किस्मों को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहकारिता विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना' एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित



जई की नयी उन्नत किस्मों की फाइल फोटो।

पति हेक्टेयर 514 विवर्टल चारा

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहायता वे बताया कि इस किस्म में हरे चारे की उपज 513.94 विवर्टल पति हेक्टेयर व सूखे चारे की उपज 114.73 विवर्टल पति हेक्टेयर मिलती है। इससे लगभग 15.39 विवर्टल पति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार ओएस 424 किस्म में हरे चारे की पैदावार 296.5 विवर्टल पति हेक्टेयर व सूखे चारे की पैदावार 65.1 विवर्टल पति हेक्टेयर तक आंकी गई है। ओएस 424 किस्म से लगभग 13.5 विवर्टल पति हेक्टेयर तक बीज प्राप्त किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी विरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। जई की इन किस्मों में ओएस 405 की भारत के मध्य क्षेत्र मुख्यतः हिमाचल, जम्मू-कश्मीर व उत्तराखण्ड महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, के लिए सिफारिश की गई है।

हरियाणा के लिए भेजा जाएगा परोजल आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. डीएस फोगाट ने बताया कि इन किस्मों को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : इन किस्मों को विकसित करने में आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. डीएस फोगाट, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. आरएन अरोड़ा, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एनके ठकराल की टीम ने काम किया। इसके अलावा डॉ. एलके मिढा, डॉ. एसके गांधी, डॉ. आरएस श्योराण, डॉ. अनिल गुप्ता व डॉ. यूएन जोशी का भी विशेष सहयोग रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

प्रैन कॉलम

दिनांक 31.12.2020 पृष्ठ संख्या..... 4 कॉलम..... 1-4

खेतीबाड़ी• एचएयू के वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों को कर रहे जागरूक वैज्ञानिक विधि से कंपोस्ट खाद तैयार कर 50 हजार तक आमदनी पाएं किसान

महबूब अटी | हिसार

किसान बाजार में मिलने वाले रासायनिक खाद के प्रयोग से बचें। घर पर ही वैज्ञानिक विधि से कंपोस्ट खाद तैयार कर आमदनी कमाएं। तैयार खाद को बेचकर भी हर माह 20 से 50 हजार रुपए तक की आमदनी की जा सकती है। एचएयू के वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों को कंपोस्ट खाद तैयार करने के संबंध में जागरूक कर रहे हैं। ऑनलाइन माध्यम से भी उन्हें कंपोस्ट खाद तैयार करने के बारे में जानकारी दी जा रही है। एचएयू के कुलपति डॉ. समर सिंह ने ऑनलाइन माध्यम से किसानों को घर पर ही खाद तैयार करने के बारे में बताया। जल्द ही किसान विश्वविद्यालय में आकर भी किसान जानकारी हासिल कर सकेंगे। किसानों की आमदनी बढ़ाना ही विविध का मुख्य उद्देश्य है।

जानिए. कंपोस्ट खाद तैयार करने की विधि

कंपोस्ट खाद तैयार करने के लिए हवादार और बिना हवादार विधि प्रयोग की जाती है। हवादार विधि से खाद एक ढेर के रूप में तथा बिना हवादार में खाद गड्ढों में तैयार की जाती है। ढेर के रूप में तैयार करने के लिए सड़ाने वाले जीवाणुओं को खुली हवा या ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। इसलिए इस विधि को एअरोबिक कहते हैं। इसके विपरीत गड्ढों में कंपोस्ट सड़ाने वाले जीवाणुओं को हवा या ऑक्सीजन की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए इसे बिना हवादार या अनएअरोबिक कहते हैं। गड्ढों में तैयार खाद अच्छे गुणों वाली होती है।

इस तरह गड्ढे बनाकर तैयार करें कंपोस्ट खाद



हिसार घर में तैयार की गई कंपोस्ट खाद को दिखाता किसान।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के अनुसार कूड़ा-कचरा पशुओं के नीचे बिछावन मिला हुआ कचरा इकट्ठा करके पहले से तैयार गड्ढे के नीचे 7-10 सेमी मोटी तह बिछाते हैं। इस तरह ऊपर 4-5 सेमी मोटी गोबर की तह लगते हैं। साथ में पशुओं का मलमूत्र भी इस पर डाल देते हैं। यह पानी की आवश्यकता को पूरी करता है। साथ ही कंपोस्ट खाद के गुणों में भी बुद्धि करता है। गोबर गैस संयंत्र से निकला हुआ गोबर मिले तो बहुत अच्छा है, क्योंकि उसमें पानी घुला हुआ होता है। इसी प्रकार तह पर तह लगाते जाते हैं, जब तक गड्ढा जमीन की सतह से 25-30 सेमी ऊपर तक न भर जाए। इसके बाद गड्ढों को ऊपर से गोबर व मिट्टी के मिश्रण से लिपाई कर देते हैं। इस लिपाई की तह 5 सेमी मोटी होनी चाहिए। यह खाद पांच माह में सड़कर तैयार हो जाती है। कुलपति का कहना है कि किसान घर पर ही खाद तैयार कर हर माह 20 से लेकर 50 हजार तक की कमाई भी उसे बेचकर कर सकते हैं।

वया है कंपोस्ट खाद: डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. जिरोद और डॉ. मुकेश कुमार के अनुसार कूड़ा कचरा, मिट्टी, राख, भूमा, बचा हुआ चारा, पौधों के ढंठल, चास, सूखी सञ्जियों के छिलके, गोभी की पत्ती, खरपतवार, जिनमें बोज न बना हो, जड़, गोशाला का चारा, पशुओं तथा मरुष्य के मलमूत्र को मिलाकर व सड़ा गलाकर तैयार किए खाद को कंपोस्ट खाद कहते हैं।

ऐसे करें जगह का चुनाव

ऐसी जगह का चुनाव करें जहां पर गड्ढा आसानी से खोदा जा सके, ऊचा स्थान हो जहां वर्ष का पानी न भर सके, गोशाला के आसपास एवं घर के पीछे वाले हिस्से में, रास्त में न हो, जिससे यातायात में असुविधा हो, गड्ढा छाया में हो।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

अभ्युक्ताता

दिनांक ३१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या ५ कॉलम ३-४

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : डॉ. छाबड़ा

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा ने कहे।

वे विश्वविद्यालय के पौधे रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बौतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुंब को रोग प्रतिरोधकता बूस्टर का विषय दिया गया। इस खुंब दिवस में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुंब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुंब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है, बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कार्बोफार, पोटेशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी ऑक्सीडेंट्स जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। उन्होंने बताया कि

उत्पादन और मुनाफे के लिए सब्जियों की संरक्षित खेती जरूरी हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में बढ़ि विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना के सहयोग से वेबिनार किया गया था। संस्थान के सहनिदेशक डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुंब का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सब्जियां मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं।

दिल के रोगियों के लिए भी खुंब का सेवन लाभकारी है। खुंब में मौजूद लीन प्लाट प्रोटीन में न सिर्फ कैलोरी की मात्रा कम होती है, बल्कि फैट भी न के बराबर होता है। उन्होंने बताया कि खुंब में पाये जाने वाले फाइटोकेमिकल्स इसे एंटी बैक्टीरियल और एंटी फंगल बनाते हैं, जो व्यक्ति को मौसमी संक्रमण को बचाने और रोग प्रतिरोधकता को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... दीर्घ भूमि

दिनांक ३१.१२.२०२२ पृष्ठ संख्या..... १ कॉलम..... २.३



हिसार। राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्य वक्ता डॉ. एके छाबड़ा व मौजूद अन्य।

फोटो: हरभूमि

कम लागत में अधिक मुनाफा देता मशरूम : डॉ. छाबड़ा

हिसार। बागवानी में विविधकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा ने कहा है कि विश्वविद्यालय के पौधे रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुंब को रोग प्रतिरोधकता कूस्टर का विषय दिया गया। इस खुंब दिवस में 40 प्रतिमानियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुंब पोषण व औषधीय गुणों से मरपूर है। खुंब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिंच वजन को बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन शी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉफर, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी ऑक्सीडेंट्स जैसे पोषक तत्व प्रत्युत्र मात्रा में पाए जाते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

पांच बजे

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक .30.12.2020...पृष्ठ संख्या..... — कॉलम.....

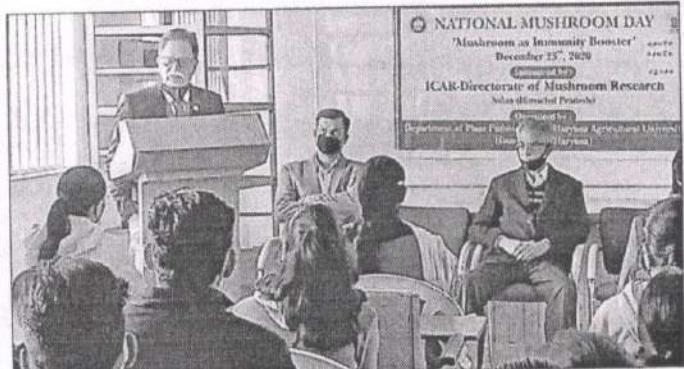
एचएयू में राष्ट्रीय खुब्ब दिवस आयोजित

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : डॉ. छाबड़ा

पांच बजे ब्लॉग

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.

एके छाबड़ा ने कहे। वे विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुब्ब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बतार मुख्यातिथि बोल रहे थे। इस वर्ष खुब्ब को रोग प्रतिरोधकता बूस्टर का विषय दिया गया। इस खुब्ब दिवस में 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्यातिथि ने बताया कि खुब्ब पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुब्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न-सिर्फ वजन को बढ़ाने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बहिन्क इसमें प्रोटीन, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉर्प, पोटशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, मीडिओकमिकल्स और एटो ब्रॉक्सीडेन्स जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को अधिक तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। खुब्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है जिसमें शाकाहारी लोगों के लिये प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है। खुब्ब



NATIONAL MUSHROOM DAY
'Mushroom as Immunity Booster'
December 25, 2020
ICAR-Directorate of Mushroom Research
National Research Project
Department of Plant Protection, Soil and Water Conservation, University

में विटामिन डी, कैल्शियम, पोटशियम और फास्फोरस हाइड्रोजो को कमज़ोर होने से रोक कर उन्हें मजबूत बनाते हैं। दिल के रोगियों के लिये भी खुब्ब का सेवन लाभकारी है। खुब्ब में मौजूद लीन प्लांट प्रोटीन में न सिर्फ कैलोरी की मात्रा कम होती है बल्कि फैट भी न के बराबर होता है। उन्होंने बताया कि खुब्ब में पाये जाने वाले काइटोकमिकल्स इसे एंटी बैक्टीरियल और एंटी फंगल बनाते हैं जो व्यक्ति को मौसमी संक्रमण को बचाने और रोग प्रतिरोधकता को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। खुब्ब के सेवन से इसमें मौजूद फॉलिक एसिड और आयरन शरीर में हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।

खुब्ब उत्पादन में प्रदेश अग्रणी : डॉ. अर्जीत राठी

पौध रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. अर्जीत सिंह राठी ने बताया कि खुब्ब उत्पादन करके युवक/युवतियां स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। हरियाणा राज्य 20,000 मीट्रिक टन खुब्ब उत्पादन करके अग्रणी स्थान

पर है। सफेद बटन खुब्ब के अलावा ढीगरी खुब्ब, शिटाके खुब्ब, लायब्समैने खुब्ब, कार्डिसैप खुब्ब इत्यादि औषधीय खुब्बों का भी उत्पादन करें। डॉ. कुशल राज ने बताया कि खुब्ब के मूल्य सर्वाधित उत्पाद जैसे अचार, बिस्कुट, पापड़, बिंदिया इत्यादि तैयार करके भी बाजार में बेचे जा सकते हैं, जिसकी बाजार में बहुत मांग है। खुब्ब दिवस के संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने कम लागत से खुब्ब उत्पादन की कई तकनीकों को लेकर चर्चा की। उन्होंने पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में किए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इससे वातावरण दूषित नहीं होगा और मिट्टी में सूक्ष्म जीवी नष्ट नहीं होंगे। डॉ. राकेश चूध ने औषधीय खुब्बों जैसे कार्डिसैप, शिटाके, लायब्समैने इत्यादि खुब्बों को उगाने की विधि पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. विनोद मलिक ने बताया कि भूमिहीन व्यक्ति भी खुब्ब का उत्पादन कर सकता है और मुनाफा कमा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

उज्जीत समाचार

दिनांक ३१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

एचएयू में राष्ट्रीय खुंब दिवस आयोजित

हिस्पर प्रागली नलवा, ३० दिसम्बर (गज प्राशर देवानन्द सोनी) : बागवानी में विविधोंकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ावा जा सकता है। ये विद्यम वीथी चाहा सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. प.के. छबड़ा ने कहे। ये विश्वविद्यालय के पौधे गोप विभाग द्वारा राष्ट्रीय खुम्ब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बातच मुख्यालियत बोले गए थे। इस दृश्य खुम्ब की गोप प्रतिरोधकता घटना का विषय दिया गया। इस खुम्ब दिवस में ४० दूतावासीयों ने भाग लिया। मुख्यालियत ने बताया कि खुम्ब पोषण व औषधीय गोपों में भरपूर है। खुम्ब में वैत्तेशी और वरका की मात्रा कम होने की कठह से यह न दिया जाना को बढ़ाने से रोकने और वरजन जलाने में मद्दायक है। वैत्तेशी इसमें प्रोटीन, विटामिन मी, विटामिन बी, विटामिन ई, कौर्सिप, पोटाशियम, फॉस्फोरस, मैलेनिन, फलओकमिकल्प और एंटी अव्याहोन्य जैसे पोषक तत्व प्रचुर

कमलागत में अधिक मुनाफा देती मशरूम : डॉ. ए.के. छबड़ा



राष्ट्रीय खुंब दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्य वक्ता डॉ. ए.के. छबड़ा व मौजूद अन्य। (छाया : सोनी)

मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न ताग के गोपों में दूर रखने में मदद करते हैं। खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा ३०-४० प्रतिशत तक पहुंचती है इसलिये शाकाहारी लोहों के लिये प्रोटीन का एक उत्तम स्रोत है। खुम्ब में विटामिन ली, कैल्शियम, पोटाशियम और फॉस्फोरस लाइंगों को कमजोर होने से रोक कर उन्हें मजबूत बनाते हैं। दिल के रोगियों के लिये भी खुम्ब का मेवन लाभकारी है। खुम्ब में मौजूद लीन प्लांट प्रोटीन में न

डॉ. अजीत राठी

पौधे गोप विभाग के अध्यक्ष डॉ. अजीत सिंह राठी ने बताया कि खुम्ब उत्पादन करके युक्त/युक्तिवां स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। हरियाणा राज्य 20,000 मांडिक टन खुम्ब उत्पादन करके अपनी ज्यादा पर है। सफेद घटन खुम्ब के अलावा हीगली खुम्ब, शिटाक खुम्ब, लालकम्बमें खुम्ब, कॉर्डिसेप खुम्ब इत्यादि औषधीय खुम्बों का भी उत्पादन करते हैं। डॉ. राकेश चूधे ने अैथ्रधीय खुम्बों में कार्डिसेप, शिटाक, लालकम्ब में उत्पादित खुम्बों को ऊपर की विधि पर विनाश से बचाया की। डॉ. विनोद मालिक ने बताया कि भूमिहीन टारफ्स भी खुम्ब का उत्पादन कर सकता है।

7/12

खुम्ब उत्पादन में प्रदेश अग्रणी :



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब नेटवर्क

दिनांक 31.12.2020 पृष्ठ संख्या.....2 कॉलम.....1-5

‘सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर अॅनलाइन वैविनार का आयोजन किया गया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से इस वैविनार को आयोजित किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि बेहतर सब्जी उत्पादन और अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सब्जियों और गोभीवाली सब्जियों की गुणवत्तापूर्ण नसरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियों के लिए नसरी संरक्षित संरचना की जैसे की पॉली हाऊस, नैट हाऊस, शैड नैट में प्रोट्रे के द्वारा विकसित की जा सकती है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस वैविनार का आयोजन किया गया। वैविनार का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डा. दविंदर सिंह, डा. अनिल कुमार रोहिला और डा. निर्मल कुमार द्वारा किया गया।



प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को जरूरी सामान व प्रमाण-पत्र वितरित करते वित्त नियंत्रक नवीन जैन व अन्य।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस वैविनार का आयोजन किया गया। वैविनार का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डा. दविंदर सिंह, डा. अनिल कुमार रोहिला और डा. निर्मल कुमार द्वारा किया गया।

डा. सुरेंद्र सिंह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कार्यक्षेत्र और महत्व के बारे में विस्तार से बताया। डा. हरदीप सिंह ने किसानों

को जॉन्च के लिए मिट्टी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पॉली हाऊस में सब्जियां उगाने की सलाह दी। डा. संदीप कुमार ने प्रतिभागियों को संरक्षित खेती की विभिन्न संरचनाओं और योजनाओं से अवगत करवाया। डा. हंसराज रोहिला ने प्रो-ट्रैट में सब्जी नसरी और डा. दविंदर सिंह ने संरक्षित संरचना के अंदर सब्जियों के उत्पादन

के बारे में विस्तार से प्रतिभागियों को समझाया। डा. पवित्रा ने फूलपूद और विषाणु से सब्जियों में होने वाली बीमारियों तथा डा. भूपेंद्र सिंह ने कीटों द्वारा सब्जियों में होने वाले रोगों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया। इस प्रशिक्षण में 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।

फल व सब्जी परीक्षण विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न :

वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप बाग बाजी विश्वविद्यालय करनाल के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने कहे। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बातौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय और अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। प्रशिक्षण के संयोजक डा. सुरेंद्र सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न सत्रों के बारे में बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... गैंग का मासिक

~~ବୀନ୍ଦୁ ମାର୍କ୍ସି~~

दिनांक ११.१२.२०२० पृष्ठ संख्या २ कॉलम ३

सज्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर वेबिनार

हिसार | एचएयू हिसार में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर ऑनलाइन वेबिनार किया। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से वेबिनार किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक अर्थिक अवसर प्रदान करता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....ज़रूरी समाचार

दिनांक ३१.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... १ कॉलम.....

लघु उद्योग स्थापित करने हेतु आगे आएं युवा : जैन प्रशिक्षण से हासिल ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं

हिसार/माली नववा, 30 दिसम्बर
(गज पराश्रमदेवानन्द सोनी) : वित्तीय संस्थानों से ज़रूरी मद्दत लेकर योजगार युवक-युवतियों लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही योजगारी को योजगार में बढ़ावकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व महाराणा प्रताप यागवानी विश्वविद्यालय करनाल के बिन नियंत्रक नवीन जैन ने कहे। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को अद्भुत बातें व योजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर



प्रतिभागियों को जरूरी सामान व प्रमाण-पत्र वितरित करते वित्त नियंत्रक नवीन जैन व अन्य। (छाया : सोनी)

के समापन अवसर पर बौरी मुख्यातिथि संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण व योल रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि स्थापित करके अपने परिवार का पालन-पोषण सकते हैं और दूसरों को भी योजगार मुहैया करवा सकते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वे ममूँह बनाकर अपना व्यवसाय शुरू करें और उसे अपनी बढ़ावा। मार्थ ही प्रशिक्षण से अंजित ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं। इस प्रशिक्षण का आयोजन

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड़ा की देखभेख में किया गया। संस्थान के मह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदागे ने संस्थान में दिन जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए संस्थान से जुड़े अधिक से अधिक लाभ उठाने का अह्वान किया। प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. मुरोद सिंह ने प्रशिक्षण के दौरान आयोजित किए गए विभिन्न सत्रों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान अचार मुख्या, कैंटी, स्क्यूवर्श, चट्टनी, जैम, टमाटर सोस, फल व मछियों को मुख्याना जैसी ल प्रकार की जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. शे.के. शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की 30 अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समापन अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

—पांच बजे—

समाचार पत्र का नाम.....
दिनांक : ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

एचएयू में फल व सब्जी परीक्षण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं युवा : नवीन जैन

पांच बजे ब्लूग

हिसार। वित्तीय संस्थानों से ज़रूरी मदद लेकर बेरोज़गार युवक-युवतियों लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आए। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोज़गारी को रोकता है और इसके अवसर मौजूदा करका सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा लम्हारणा प्राताप बागवती विश्वविद्यालय कराल के वित्त नियंत्रक नवीन जैन ने कहा। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुमूलित जाति व जनजाति को महिलाओं को आर्थनीय बनाने व सब्जी व फलों विश्वविद्यालय करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बताए भूमिकातीय बोले रहे थे।



प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के शिक्षण संस्थान में सिरमा रोड स्थित केंद्रीय सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया

गया। कार्यक्रम के दो दिन प्रशिक्षणार्थियों को स्वरोज़गार स्थापित करने के लिए ज़रूरी सामग्री मौजूदा करवाया गया। मूल्यांकित ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण व ज़ाहरी शेत्रों के युवक-युवतियों लघु उद्योग स्थापित करके अपने परिवार का पान-पोषण सकते हैं और दूसरों को भी भी रोज़गार मौजूद करवा सकते हैं। उन्होंने आलोचना किया कि यहाँ से प्रशिक्षण इसील कर दें समृद्ध बनाकर अपना व्यवसाय बुरू कर और उसे आगे बढ़ाएं। साथ ही प्रशिक्षण से अर्जित ज्ञान को अधिक से अधिक फैलाएं।

इस प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा को देखाये में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संस्थान में

दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए संस्थान से युवक अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

प्रशिक्षण के संयोजक डॉ. सुरेंद्र सिंह ने प्रशिक्षण के दोहरा आयोजित किए गए विभिन्न मंडों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण के दोहरा अवसर मूल्य, कैंडी, स्कॉर्प, चट्टांग, जैम, टमाटर साम, फल व मूँगीयों को सुखाना जैसे हर प्रकार को जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई।

कार्यक्रम के समाप्त अवसर पर डॉ. ली.के. शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की 30 अनुमूलित जाति व जनजाति को महिलाओं को प्रदान किया गया और समाप्त अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

सिटी पत्र

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ..३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

एचएयू में सभियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर वेबिनार आयोजित

सिटी पत्र न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में सभियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (गार्डीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से इस वेबिनार

को आयोजित किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रतिभागियों को नवीन तकनीकों के साथ खुद का कृषि व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सभियों मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती है। विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन

गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक आर्थिक अवसर प्रदान करता है। वेहतर महजी उत्पादन और अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सभियों और गोधीवर्गीय सभियों की गुणवत्तापूर्ण नसरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. दविंदर सिंह, डॉ. अनिल कुमार गोहिला

और डॉ. निर्मल कुमार द्वारा किया गया। डॉ. मुरेंद्र मिह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कायदेश्वर और महत्व के बारे में बताया। डॉ. हरनाल मिह ने किसानों को जांच के लिए मिट्टी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पौनी द्वारा मैं सभियों उगाने की सलाह दी। इस प्रशिक्षण में 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नं. २१२

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

युवा लघु उद्योग स्थापित करें : जैन



हिसार/३० दिसंबर/रिपोर्टर

वित्तीय संस्थानों से जरूरी मदद लेकर बेरोजगार युवक-युवतियां लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आएं। ऐसा करके वे देश-प्रदेश में फैल रही बेरोजगारी को रोजगार में बदलकर अच्छे अवसर मुहैया करवा सकते हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के क्रित्त नियंत्रक नवीन जैन ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में प्रदेश की अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड स्थित केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए जरूरी सामान मुहैया करवाया गया। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुइडा की देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने संस्थान में दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी दी। संयोजक डॉ. सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि इस प्रशिक्षण के दौरान अचार मुरब्बा, कैंडी, स्कैथ, चटनी, जैम, टमाटर सॉस, फल व सब्जियों को सुखाना जैसी जानकारी दी गई। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. डीके शर्मा ने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रदेश की 30 अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समापन अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सियोपट्टे

दिनांक ३०.१२.२०२० पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....—

लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आएं युवा: नवीन जैन

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित फल व सब्जी परीक्षण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

चौधरी चरण न्यूज़, हिसार। विनीय गौड़ीयाना में बहुरी मदर लेकर खेड़े-बाहर याक-पर्वतियों लघु उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आए। लौह काँक के देश प्रदेश में कैल रही लौह-नगारी को रोजाना में बदलकर बैंडे असर मुहैया करता सकती है। ऐसे विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व नहालगढ़ प्रशाप यात्रानी विश्वविद्यालय बनाने के लिए नियमित नवीन जैन ने कहा। ऐसे विश्वविद्यालय की मूल्यांकन जाति व बनानी की महिलाओं को आमने-सामने व स्वीकार स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण



हिसार। प्रशिक्षण के समाप्त अवसर पर प्रतिभागियों को प्रशाप-पत्र वितरित करते विस नियंत्रक नवीन जैन व अन्य।

शिक्षण के समाप्त अवसर पर चौधरी मुख्यालिपि चौल रहे।

प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के सभाना नेतृत्व द्वारा दीर्घ समय से विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान में सिरसा रोड सिक्षा केन्द्रीय ऐसे अनुसंधान संस्थान के सहयोग से किया गया। मुख्यालिपि ने प्रशिक्षणार्थियों को समर्पित करते हुए कहा कि यारीण व शहरी क्षेत्र के युवक-युवतियों लघु उद्योग स्थापित करें। अपने परिवार व घरन-पोषण सकते हैं और दूसरे वर्ष भी योग्य युवा बनाया सकते हैं।

उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण

आयोजित ज्ञान के अधिक फैलाए। संस्थान के सह-नियंत्रक (प्रशिक्षण) द्वारा आयोजित योग्यता विभिन्न प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान से युवक अधिक से अधिक जाभ ढाठान का आल्यान किया। इस प्रशिक्षण के द्वारा अवाधि पाला, किंडो, स्कॉलरशिप, बटनो-जैम, टमटट सेम, फल व सब्जियों की सुखानी जैसी हर प्रकार की जानकारी दी गई।

उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण प्रोग्राम को 30 अनुमोदित ज्ञान व जनजाति की महिलाओं को प्रदान किया गया और समाप्त अवसर पर उन्हें प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नं. भा. ३१२
दिनांक २५.१२.२०२१ पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

सब्जियां जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं : गोदारा

हिसार/३० दिसंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सब्जियों की संरक्षित खेती से किसानों की आय में वृद्धि विषय पर सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान व संस्थान विकास योजना (राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना) के सहयोग से वैविनार का आयोजन किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि सब्जियां मानव आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न तरह के जरूरी पोषक तत्व प्रदान करती हैं। विकासशील देशों में सब्जी उत्पादन गरीबी और बेरोजगारी को कम करने के लिए एक आर्थिक अवसर प्रदान करता है। बेहतर सब्जी उत्पादन और

अच्छे मुनाफे के लिए संरक्षित खेती के द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, बेल वाली सब्जियों और गोभीवर्गीय सब्जियों की गुणवत्तापूर्ण नर्सरी और सब्जी उत्पादन किया जा सकता है। वैविनार का संचालन प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. दविंदर सिंह, डॉ. अनिल कुमार रोहिला और डॉ. निर्मल कुमार द्वारा किया गया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने सब्जी उत्पादन के लिए संरक्षित खेती के कार्यक्षेत्र और महत्व के बारे में बताया। डॉ. हरदीप सिंह ने किसानों को जांच के लिए मिटटी और पानी के नमूने लेने का तरीका बताते हुए उसी अनुसार पॉली हाऊस में सब्जियां उगाने की सलाह दी। डॉ. संदीप कुमार ने प्रतिभागियों को संरक्षित खेती की विभिन्न संरचनाओं और

योजनाओं से अवगत करवाया। डॉ. हंसराज रोहिला ने प्रो ट्रै में सब्जी नर्सरी और डॉ. दविंदर सिंह ने संरक्षित संरचना के अंदर सब्जियों के उत्पादन के बारे में समझाया। डॉ. पवित्रा ने फफूंद और विषाणु से सब्जियों में होने वाली बिमारियों तथा डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कीटों द्वारा सब्जियों में होने वाले रोगों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया। उन्होंने किसानों को कीटों व बिमारियों की रोकथाम के लिए रसायनों के सूझबूझ से प्रयोग करने की सलाह दी। डॉ. निर्मल कुमार ने किसानों को सब्जियों के मूल्य संवर्धन व उसके लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण में 25 किसान और 10 विद्यार्थी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... जगभौ

दिनांक ३१. १२. २०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

ऑनलाइन वेबिनार में बताए सभियों की संरक्षित स्थिति से आय बढ़ाने के तरीफ